ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

समस्त देशवासियों को
145वें आर्यसमाज स्थापना दिवस,
नव वर्ष विक्रमी सम्वत् 2076 की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 42, अंक 20 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 1 अप्रैल, 2019 से रविवार 7 अप्रैल, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सम्मान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्त्वावधान में
समस्त आर्य समाजों एवं
आर्य संस्थाओं के सहयोग से

बुद्धवार 20 मार्च 2019

95 वर्ष के बुजुर्ग आर्य महानुभाव, मातृशक्ति एवं 16 दिन के बालक की उपस्थिति से

होली का उत्सव बना आर्यों का मिलन पर्व

आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती को वर्ष 2019 का ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान भेंट करते श्री योगेश मुंजाल जी साथ में सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी एवं सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी उत्तमा यति जी।

दक्षिण भारत में वेद एवं वैदिक धर्म की रक्षार्थ विशेष कार्य करने वाले वानप्रस्थी श्री आर्यमुनि जी के परिवार का विशेष सम्मान प्राप्त करते सुपुत्र श्री सिद्धार्थ भार्गव एवं धर्मपत्नी श्रीमती जाह्नवी भार्गव। साथ में हैं श्री विद्यामित्र ठुकराल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, माता कृष्णा ठुकराल जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती।

आर्यजगत के हजारों परिवारों के छोटे बच्चे से लेकर वयोवृद्ध आर्यजनों ने लिया भाग

वेद-स्वाध्याय

हिंसक अपने लिए विनाशकारी, दूसरों के लिए कल्याणकारी

यश्चकार न शशाक कर्त्तुं शश्रे पादमंगुरिम्।
चकार भद्रमस्मभ्यमात्मने तपनं तु सः।। अथर्व० 4/18/6
ऋषिः **शुक्रः**।। देवता – **अपामार्गो वनस्पतिः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ – **यः** = जो **चकार**=हिंसा करता है, **कर्त्तुंन शशाक** = वह कर नहीं सकता, करने में अशक्त रहता है वह **पादं अंगुरिम्** = अपने पैर-अंगुलि को, अपने ही **अङ्ग** = अवयव को **शश्रे** = तोड़ लेता है, हिंसित करता है। हमारी हिंसा करने वाला **अस्मभ्यम्** = हमारा तो **भद्रम्** = सदा भला ही **चकार** = करता है, **तु** = किन्तु **सः** = वह **आत्मने** = अपने लिए **तपनम्** = अपने लिए **तपनम्** = सन्ताप करता है, अपने को तपाता है।

विनय – जब कोई निर्बल, अशक्त पुरुष क्रोध के आवेश में आकर किसी बलवान् की हिंसा करने के लिए झुँझला कर उठता है तो वह प्रायः अपने ही हाथ-पैरों को तोड़ लिया करता है। वह उस बलवान् का कुछ नहीं बिगाड़ पाता। उतावलेपन का, बिना सोचे-विचारे उत्तेजित होकर कुछ-न-कुछ कर डालने का, यही परिणाम हुआ करता है। वास्तव में सदैव निर्बल पुरुष ही हिंसा करता है। और, हिंसा द्वारा वह जो कुछ करना चाहता है, उसे करने में अशक्त रहता है, क्योंकि हिंसा द्वारा हम कभी किसी का विनाश नहीं कर सकते, कुछ देर के लिए उसे सता सकते हैं, उसके कार्य को रोके भी रख सकते हैं, पर इस सबसे तो वह हिंस्यमान पुरुष और भी फूलता-फलता है, बढ़ता है। हिंसा द्वारा सदैव अपनी ही हानि होती है। .जरा उच्च दृष्टि से देखें तो यह भी दीखेगा कि किसी अपने मनुष्य-भाई की हिंसा करने में हम असल में अपने ही अङ्ग-अवयव को, अपने ही हाथ-पैर को तोड़ते हैं। अपनों की हिंसा करके हम अपने को ही जलाते और अपने आत्मा को ही कमजोर करते हैं। इसलिए ज्ञानी पुरुष अपनी हिंसा करनेवाले पर सदा तरस ही खाते हैं। जब उन्हें कोई लाठी मारता है, तो उन्हें अपने शरीर की कुछ परवाह नहीं होती, किन्तु उन्हें फिक्र यह होती है कि मारनेवाले के कोमल हाथों में तो कहीं लाठी चलाने से कुछ पीड़ा नहीं पहुँची है? वास्तव में हमारी हिंसा से हमारा तो सदा भला ही होता है, इससे हमारी सहनशक्ति बढ़ती है और हमारी तपस्या पूर्ण होती है। दूसरी ओर यदि इससे हमारा शरीर भी छूट जाता है तो हमारा एक पवित्र यज्ञ पूरा हो जाता है और इससे अत्यन्त आत्मशक्ति बढ़ती है एवं हमारा तो सब प्रकार भला-ही-भला होता है, पर तपना तो उस बेचारे हिंसक को पड़ता है। पहले वह अपनी क्रोधाग्नि में तपता है और पीछे उसे अपने हिंसा-पाप के प्रतिफल में आये दुःख की अग्नि में तपना पड़ता है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ब्रिटिश सरकार की बन्दूकें और भारतीय संन्यासी का सीना

ठीक आज से 100 वर्ष पहले साल 1919 मार्च का महीना था। देश पर विदेशी शासन था और भारतीय नागरिक गुलामी की जिन्दगी जीने को मजबूर थे। हालाँकि देश में जगह क्रांति के अंकुर फूट चुके थे पर अंग्रेजी सरकार उन अंकुरों को अपने विदेशी बूटों से कुचल भी रही थी। ऐसे माहौल में एक अंग्रेज अधिकारी जिनका नाम था सर सिडनी रौलेट, उनकी अध्यक्षता वाली सेडिशन समिति की सिफारिशों के आधार पर काला कानून (रॉलेट ऐक्ट) बनाया गया। यह कानून देश में स्वतंत्रता के उभरते स्वर को दबाने के लिए था। इसके अनुसार अंग्रेजी सरकार को यह अधिकार प्राप्त हो गया था कि वह किसी भी भारतीय पर अदालत में बिना मुकदमा चलाए उसे जेल में बंद कर जो जुल्म चाहे कर सकती थी।

इस कानून के तहत अपराधी को उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज करने वाले का नाम जानने का अधिकार भी समाप्त कर दिया गया था। यूँ तो इस कानून के विरोध में देशव्यापी हड़तालें, जूलूस और प्रदर्शन होने लगे। ये राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल का युग था। अधिकांश भारतीय मौन थे लेकिन आर्य समाज के सिपाही उस समय सीना ताने अंग्रेजी सरकार के सामने खड़े हो गये थे। इस आन्दोलन के सिपाही भारत माँ के एक बहादुर लाल का नाम था स्वामी श्रदानंद जो गुलामी के घनघोर अँधेरे में आजादी का पथ खोजने के लिए स्वामी दयानन्द जी महाराज से प्रेरणा लेकर आजादी की मशाल लेकर चल निकला था। तब गाँधी जी ने कहा था कि आर्यसमाज हिमालय से टकरा रहा है। वह हिमालय था भारत में ब्रिटिश सरकार जिनके बारे में कहा जाता है कि उनके राज्य में सूरज भी नहीं डूबता । लेकिन चट्टानों से ज्यादा आर्य समाज के हौंसले कहीं ज्यादा बुलंद निकले।

30 मार्च 1919 ई. के दिन रौलट एक्ट के विरोध में आन्दोलन शुरु हुए। दिल्ली में इस सत्याग्रही सेना के प्रथम सैनिक और मार्गदर्शक स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। सब यातायात बन्द हो गये। स्वयं सेवक पुलिस द्वारा पकड़ लिए गए। भीड़ ने साथियों की रिहाई के लिए प्रार्थना की तो पुलिस ने गोलियां चला दी। सांयकाल के समय बीस पच्चीस हजार की अपार भीड़ एक कतार में भारत माता की जय के नारे लगाती हुई घंटाघर की ओर स्वामी जी के नेतृत्व में चल पड़ी। अचानक कम्पनी बाग के गोरखा फौज के किसी सैनिक ने गोली चला दी, जनता क्रोधित हो गई। लोगों को वहीं खड़े रहने का आदेश देकर स्वामी जी आगे जा खड़े हुए और धीर गम्भीर वाणी में पूछा- तुमने गोली क्यों चलाई?

सैनिकों ने बन्दुकों की संगीने आगे बढ़ाते हुए कहा- "हट जाओ नहीं तो हम तुम्हें छेद देंगे।" स्वामी जी एक कदम और आगे बढ़ गए अब संगीन की नोक स्वामी जी की छाती को छू रही थी। स्वामी जी शेर की भांति गरजते हुए बोले- "मेरी छाती खुली है हिम्मत है तो चलाओ गोली।" अंग्रेज अधिकारी के आदेश से सैनिकों ने अपनी संगीने झुका लीं और जलूस फिर चल पड़ा।

इस घटना के बाद सब और उत्साह का वातावरण बना। 4 अप्रैल को दोपहर बाद मौलाना अब्दुला चूड़ी वाले ने ऊँची आवाज में कहा स्वामी श्रद्धानन्द की तकरीर (भाषण) होनी चाहिए। कुछ नौजवान स्वामी जी को उनके नया बाजार स्थित मकान से ले आए। स्वामी जी मस्जिद की वेदी पर खड़े हुए। उन्होंने ऋग्वेद के मन्त्र **'त्वं हि नः पिता'** से अपना भाषण प्रारम्भ किया। भारत ही नहीं इस्लाम के इतिहास में यह प्रथम घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम ने मस्जिद के मिम्बर से भाषण किया हो।

पर होनी को कुछ और मंजूर था। 13 अप्रैल आते-आते भारत के पंजाब प्रान्त के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर के निकट जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 (बैसाखी के दिन) रौलेट एक्ट का विरोध करने के लिए एक सभा हो रही थी जिसमें जनरल डायर नामक एक अँग्रेज ऑफिसर ने अकारण उस सभा में उपस्थित भीड़ पर गोलियाँ चलवा दीं जिसमें 1000 से अधिक व्यक्ति मरे और 2000 से अधिक घायल हुए। इस घटना के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली में आसन जमाया। उसी समय काँग्रेस का अधिवेशन अहमदाबाद में हुआ। इसकी अध्यक्षता स्वामी जी ने की। पंजाब सरकार स्वामी जी को गिरफ्तार करना चाहती थी। अमृतसर में अकालियों ने गुरु का बाग में सरकार से मोर्चा ले रखा था। स्वामी जी अमृतसर पहुंच गए। स्वर्ण मन्दिर में पहुंचकर 'अकाल तख्त' पर एक ओजस्वी भाषण दे डाला। 'गुरु का बाग' में पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर 1 वर्ष 4 मास की जेल की सजा दे दी। बाद में 15 दिन में ही रिहा कर दिया गया। इसके बाद तो मानो स्वामी जी क्रांति की एक ऐसी मशाल बन गये जो सोये भारत के युवाओं के रक्त अग्नि बनकर धधकने लगे। माना जाता है कि यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी और देश को अंग्रेजी शासन से मुक्ति मिली। इस महान संन्यासी अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द को उनके इस साहस और त्याग के 100 वर्ष पूरे होने पर आर्य समाज का नमन।

- सम्पादक

.....सैनिकों ने बन्दुकों की संगीने आगे बढ़ाते हुए कहा- "हट जाओ नहीं तो हम तुम्हें छेद देंगे।" स्वामी जी एक कदम और आगे बढ़ गए अब संगीन की नोक स्वामी जी की छाती को छू रही थी। स्वामी जी शेर की भांति गरजते हुए बोले- "मेरी छाती खुली है हिम्मत है तो चलाओ गोली।" अंग्रेज अधिकारी के आदेश से सैनिकों ने अपनी संगीने झुका ली और जलूस फिर चल पड़ा।.....

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के सहयोग से

17वाँ आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह सम्पन्न

ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान-2019 आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती को

ओम शान्तिधम संस्थान के संस्थापक श्री ओममुनि जी परिवार का दक्षिण भारत (कर्नाटक) में विशेष कार्यों के लिए हुआ सम्मान: सुपुत्र सिद्धार्थ भार्गव एवं पुत्रवधू श्रीमती जाह्नावी भार्गव जी हुए उपस्थित

आर्यसमाज में अधिकतम संख्या दिवस पर सबसे अधिक उपस्थिति के लिए पुरस्कारों का हुआ वितरण

आर्यसमाज प्रीत विहार को प्रथम एवं आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी को मिला द्वितीय पुरस्कार

आर्यसमाज ऋषि दयानंद का एक वृहद परिवार है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव प्रयासरत रहती है कि दिल्ली की समस्त आर्य समाजें एवं आर्य शिक्षण संस्थाएं मिल-जुलकर प्रेम सौहार्द के वातावरण में प्रत्येक पर्व को वैदिक विधि से मनाएं। गत वर्षों की भांति 20 मार्च 2019 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकंडरी स्कूल राजा बाजार के विशाल प्रांगण में में आर्य परिवार होली मंगलमिलन समारोह का विशेष भव्य आयोजन किया गया। इस प्रेरणाप्रद आयोजन का महाशय धर्मपाल मीडिया सैंटर द्वारा दि आर्य समाज यू-ट्यूब चैनल के माध्यम से सीधा प्रसारण किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप देश के कोने-कोने में और विदेशों में हजारों आर्यजनों ने होली मंगलमिलन समारोह का आनंद लिया तथा सबने इस अदभुत प्रेरक आयोजन की प्रशंसा की। होली मंगलमिलन समारोह का शुभारंभ नवसस्येष्टि यज्ञ के द्वारा हुआ। आचार्य नरेंद्र मैत्रेय जी के ब्रह्मत्व में सभा के प्रधान श्रीमती एवं श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्रीमती एवं श्री सतीश चड्डा जी, श्रीमती एवं श्री प्रवीण आर्य जी, श्रीमती एवं श्री पुनीत गुप्ता जी, श्रीमती एवं श्री उदित कुमार शास्त्री जी, श्रीमती एवं श्री रोहित सचदेव जी, श्रीमती एवं श्री प्रणव आर्य जी, श्रीमती एवं श्री वरुण कुमार सिंह जी आदि महानुभावों ने नवसस्येष्टि यज्ञ में यजमान बनकर सर्वमंगल की कामना की। सभी यजमानों के ऊपर पुष्पवर्षा की गई। इस अवसर पर सभी आर्यजनों को चंदन का तिलक लगाकर होली की शुभकामनाएं कार्यक्रम स्थल के प्रवेश द्वार पर दी जा रही थी। कार्यक्रम स्थल की शोभा देखते ही बनती थी। सुंदर फूलों से सजा-धजा मंच एवं बैकड्राप उस पर लिखा हुआ आर्य परिवार होली मंगलमिलन समारोह तथा मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए देश के होनहार, कर्णधार, आर्य विद्यालयों के बच्चे, उपस्थित विशाल जनसमूह का मन मोह रहे थे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभागी बनने वाले स्कूलों में रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल, आर्यवीर मॉडल पब्लिक स्कूल बादली, दयानंद पब्लिक स्कूल शादी खामपुर, आर्यवीर दल शाखा कीर्तिनगर, आर्य

हास्य कवि श्री अरुण जैमिनी के हास्य और वीर रस से परिपूर्ण कविताओं ने भरा आर्यों में जोश

गुरुकल तिहाड़ गांव के बच्चों ने अलग-अलग प्रेरणाप्रद मधुर प्रस्तुति से सभी को लाभान्वित करते हुए यह सुनिश्चित किया कि आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल है। इन सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए इन संस्थाओं के अध्यापक-अध्यापिकाओं को बहुत-बहुत बधाई। जो अथक परिश्रम और पुरुषार्थ करके इन बच्चों को सांस्कृतिक कार्यक्रम सिखाते हैं और कड़ा अभ्यास कराते हैं।

कार्यक्रम का संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने किया। बीच-बीच में सभी आर्यजनों को होली की बधाई देते हुए आपने ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान 2019 की उद्घोषणा करते हुए आजीवन सेवाव्रती, वरिष्ठ आर्य

समारोह में उपस्थित होने पर सबसे नवजात शिशु, नव दम्पति, सबसे वरिष्ठ पुरुष एवं सबसे वरिष्ठ महिला को भी प्रशस्ति पत्र भेंट करके किया गया सम्मानित

संन्यासी स्वामी प्रणावानंद सरस्वती के द्वारा गुरुकुलीय शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का भरपूर उल्लेख किया और आपने कहा कि इस अवसर पर स्वामी प्रणावानंद सरस्वती जी को ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति सम्मान 2019 प्रदान करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। इस तरह स्वामी जी को सम्मान प्रदान किया गया। इस क्रम में श्रीमती जाह्नवी जी एवं श्री सिद्धार्थ भार्गव जी बैंगलोर को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हास्य कवि अरुण जैमनी जी ने हास्य कविताओं से सभी को हंसी खुशी मनाने का प्रेरक संदेश दिया।

होली मंगल मिलन समारोह में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सबसे कम 16 दिवस की आयु की आर्य परिवार की लाडली अर्चिता को मधुर सम्मान एवं शुभकामनाएं प्रदान की गई। इस क्रम में 95 वर्षीय माता जी को सबसे अधिक आयु की आर्य महिला की उपस्थिति हेतु सहर्ष सम्मान प्रदान किया गया तथा पुरुषवर्ग में भी एक 95 वर्षीय आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर जी को सम्मानित किया गया। इस क्रम में नवविवाहित युगल दंपति को जो कि आर्य परिवार की शान बने। उन्हें सहर्ष सम्मानित किया गया। ये समस्त सम्मान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हर वर्ष दिए जाते है। होली उत्सव में आए हुए सभी आर्यजन उमंग, उत्साह और उल्लास से भरपूर थे और क्यों न हो जब बात होली की हो तो अपने आप मन में उमंग, तरंग का आना स्वभाविक है। लेकिन आर्यों की होली एक आदर्श होली होती है। जिसमें हुडदंग नहीं केवल सात्विक तरंग होती है। जिसे सबने महसूस किया। इस अवसर पर सभा के प्रधान आदरणीय धर्मपाल आर्य जी ने 26 मार्च को आयोजित होने वाले पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के जन्मोत्सव का निमंत्रण उपस्थित विशाल जनसमूह को देते हुए होली की हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान की और इस अभूतपूर्व आयोजन के लिए उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद किया।

ज्ञात हो कि गतवर्ष 1 अप्रैल 2018 को सभा की ओर से दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के लिए निर्देश किया गया था कि इस दिन को अधिकतम संख्या दिवस के रूप में मनाएं। जिसके परिणाम स्वरूप आर्य समाज प्रीत विहार की सबसे ज्यादा 1000 से अधिक संख्या की उपस्थिति दर्ज हुई। वहीं दूसरे नंबर पर आर्य समाज सी-3 जनकपुरी का स्थान रहा। होली के अवसर पर दोनों आर्य समाजों के माननीय प्रधान श्री सुरेंद्र रैली जी (प्रीत विहार) तथा श्री शिवकुमार मदान जी (सी-3 जनकपुरी) को स्मृति चिह्न एवं सम्मान राशि क्रमशः 1 लाख व 50 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई।

श्री विनय आर्य जी महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज के सेवा कार्यों का वर्णन करते हुए महाशय धर्मपाल जी की आर्य समाज के प्रति समर्पण एवं दानशीलता का जिक्र करते हुए कहा कि महाशय जी के सहयोग से ही आप ये मीड़िया टीम देख रहे हो जो सारे कार्यक्रम को लाइव टेलीकास्ट तथा कवरेज कर रही है। विद्यार्थी प्रतिभा विकास योजना के विषय में बताते हुए आपने कहा कि आर्य जगत के प्रतिभावान बच्चे उच्च भारतीय सेवाओं में आगे आए। इसके साथ-साथ आठवी कक्षा में जो बच्चे 95 प्रतिशत अंकों के साथ पास होंगे उनके लिए भी महाशय धर्मपाल जी की ओर से राष्ट्र स्तर पर सहयोग प्राप्त किया जाएगा। श्री विनय जी ने सभी को पुनः महाशय जी के जन्म दिन 26 मार्च का आमंत्रण दिया जिसे सभी ने स्वीकार किया। भोजन की व्यवस्था कार्यक्रम के शुभारंभ से प्रारंभ हो गई थी। जो कि समापन तक लगातार चलती रही। सभी ने प्रेमपूर्वक कार्यक्रम का आनंद लिया और शांतिपाठ के बाद सभी अपने-अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर गए।

प्रत्येक व्यक्ति को मिला जीतने का मौका : लक्की ड्रा से निकाले गए इनामी कूपन

प्रथम पुरस्कार : अर्थव, द्वितीय पुरस्कार : नवीन, तृतीय पुरस्कार : कमला प्रसाद पटवा

आर्यसमाज स्थापना दिवस 6 अप्रैल, 2019 को कमानी ऑडिटोरियम में दिए जाएंगे पुरस्कार

सभा द्वारा घोषित अधिकतम संख्या दिवस (1 अप्रैल, 2018) को सबसे अधिक आर्यजनों की उपस्थिति के लिए पुरस्कार

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी से आर्यसमाज प्रीत विहार के लिए प्रथम पुरस्कार 1 लाख रुपये की राशि का चैक एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते आर्य समाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली जी एवं आर्यसमाज के सदस्य।साथ में हैं सभा मन्त्री श्री वीरेन्द्र सरदाना जी एवं उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी एवं अन्य आर्यजन

प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी से आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी के लिए द्वितीय पुरस्कार 50 हजार रुपये का चैक एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते आर्यसमाज के प्रधान श्री शिव कुमार मदान, मन्त्री श्री रमेश आर्य। साथ में हैं श्री योगेश मुंजाल, श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, स्वामी प्रणवानन्द एवं अन्य आर्यजन

मिलन समारोह – होली के अवसर पर सभा की ओर से प्रदान किए गए विभिन्न सम्मान

समारोह में सबसे अधिक आयु के महानुभाव आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर जी का सम्मान

सबसे अधिक आयु की महिला महानुभावा श्रीमती माया देवी जी का सम्मान

सबसे नव विवाहित युगल का सम्मान करते स्वामी प्रणवानन्द जी एवं साध्वी उत्तमायति जी

समारोह में सबसे छोटे बच्चे के रूप में अपने माता-पिता के साथ आई 16 दिन की कन्या जी का सम्मान

विश्व हस्त लेखन में प्रथम स्थान विजेता श्री द्रोणाचार्य जी सभा प्रधान जी को शुभकानाएं देते हुए

डॉक्यूमैंटी एवं आर्यसमाज के डाटा कलैक्शन के कार्य हेतु श्री अमृत राय व श्री सचिन का कराया गया परिचय

होली मंगल मिलन समारोह में मलेशिया से पधारी आर्य महिला का स्वागत एवं सम्मान करते श्री योगेश मुंजाल जी एवं श्रीमती वीना आर्या जी

समारोह के अवसर पर आर्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित एवं पं. लेखराम जी द्वारा लिखित पुस्तक पुनर्जन्म प्रमाण का लोकार्पण करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री संजीव आर्य, स्वामी प्रणवानन्द, श्रीमती कृष्णा ठुकराल एवं साध्वी उत्तमायति जी।

द्वार पर बनी सुन्दर रंगोली बनी आकर्षण का केन्द्र

प्रत्येक प्रतिभागी के लिए था पुरस्कार बच्चों से लक्की ड्रॉ के लिए पर्ची निकलवाते अधिकारी

होली के अवसर पर 'आज का संकल्प'
सभी सरकारी दस्तावेजों - बैंकों आदि में अपने हस्ताक्षर हिन्दी में ही करने के प्रस्ताव का एक स्वर में हाथ उठाकर संकल्प लेते आर्यजन।

विद्यालयों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलकियां

होली आई रे - आर्य वीर मॉडल स्कूल, बादली की प्रस्तुति

सर पे हिमाचल का छत्र है - महर्षि दयानन्द प. स्कूल शादीखामपुर की प्रस्तुति

आजादी की खुली हवा - वैदिक शिक्षा केन्द्र प्रीत विहार की प्रस्तुति

रंग दे बसन्ती- आर्य हंसराज प. स्कूल भलस्वा की प्रस्तुति

आया झूम के बसन्त - रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल राजा बाजार की प्रस्तुति

ऐ वतन - आर्य वीरांगना दल मंगोलपुरी की प्रस्तुति

'मोबाइल के यूज-मिसयूज' नाटिका प्रस्तुत करते आर्य शिशुशाला, ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 के बच्चे

पलवामा आतंकी हमले पर आधारित 'पुलवामा के शहीद' नाटिका की प्रस्तुति देते आर्य वीर दल कीर्ति नगर के आर्यवीर

आर्य परिवार के साथ नाइजीरिया में घटित सच्ची घटना पर आधारित नाटिका का मंचन करते गुरुकुल तिहाड़ ग्राम के बच्चे

सभा द्वारा तैयार मोबाइल एप्प आर्यसमाज नामावली पर आधारित नाटिका की प्रस्तुति

आगन्तुक आर्यजनों का द्वार पर किया गया चन्दन तिलक से स्वागत

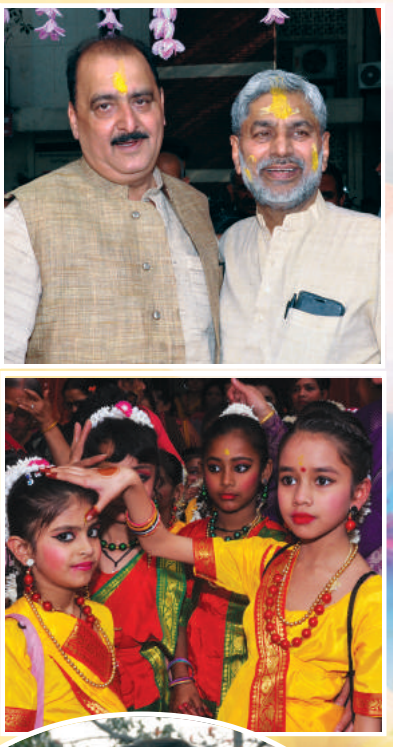

बच्चों के लिए नि:शुल्क गुब्बारे

व

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से टाट्टू

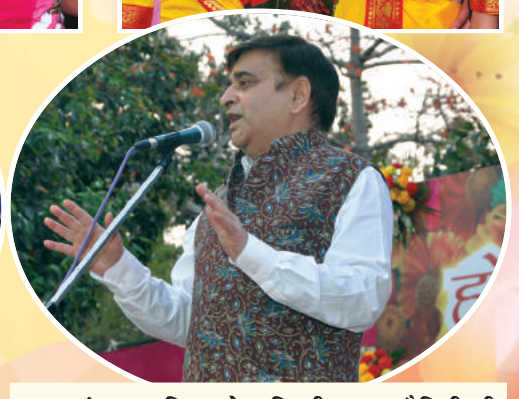

हास्य व्यंग्य प्रस्तुति करते कवि श्री अरुण जैमिनी जी

Listen to the call of Mother Earth

One mother is that who gives birth to us, up brings us. Another 'mother' is the one who is known to the world as Mother Earth. It gives us breath, food, and drink, gives space to live. Let it be said that after the birth, the things seen in the world, everything is the same as the Mother Earth Mother. When our biological mother fells ill then we get upset, we take care of her each day and night in her treatment but when the Mother Earth which has millions of 'sons and daughters', fell sick and is calling today but no one has time to take har care of.

After all, why have we become ignorant of this 'mother' today? The green trees are being cut down, its inner side has been spoiled and filled with chemicals and waste materials and thus made poisonous. We have tapped so much water that many parts of the world have become waterless. Out of the total water left in the world at present, 97.5 percent of the water is oceanic, which is saline. The remaining 1.5 percent is in the form of ice. Only 1 percent of the water is left with us which is potable. By 2025, half the population of India and 1.8 percent of the world population will not have drinking water and by 2030 global demand will increase by 40 percent more than supply.

After this, due to a further increase in the use of natural resources like mineral substances such as coal, asbestos etc, we are continuously exploiting this mother earth. Moreover, if the rate of consumption of developed countries is considered, then by 2050, the exploitation will reach by 140 billion tonnes per year. That is, it will make the earth be completely hollow. Just think about what will happen when the earth will not have water inside it and trees outside it. The same thing will happen which we have always heard, then there will be a huge upheaval in nature. Due to the earthquake, the entire country and civilizations will fall into the womb of the earth. Wherever the civilizations have created, will transform into the ocean.

Everyone knows that in the form of nature, God has given humans a very beautiful gift. But we are proved to be failing to keep this gift alive, and later we will have to bear the brunt of this nature. Apart from the beautiful nature, we have many other things such as food, water, trees, energy, minerals etc. etc. But if we do not wake up in time, we will lose these substances and then finally how will we survive?

We know that the necessity is the mother of invention. But if we adopt inventions with respect to our requirements, then we can save a lot to the earth or to our next generation. Today, the biggest fuel used in the production of power is coal which is being exploited regularly from the earth's inner self. But for how long? In the next few years, coal resources will be completely exhausted. We can not deny the fact that the population of the country is increasing rapidly. Most of the electricity (about 53 percent) in the country is produced from coal and it has been predicted that after 2040-50, the stocks of coal in the country will end. What will the world do then for the electricity?

Most will answer- water! But when looking at global warming, climate change etc it does not seem to be the right answer! You yourself look around you, see how many small rivers and rivulets have been transformed today. They have either dried up or become dirty nallahs. Seeing this, it can be easily estimated that the life of our rivers is no longer prolonged. Now, in the end, the next answer can be the solar energy which is probably the most appropriate option in our hands in the future.

Apart from being an incomparable source of solar energy, one of the best options in India's other non-conventional energies is Solar Energy. It causes no harm to nature, and today solar energy is the best and cleanest way to meet our growing demand for energy requirements in India. In this direction, the country's oldest social organization, Arya Samaj, is also going to launch a good initiative in which each Arya Samaj temple and Arya Institute will support the cause of nature by using solar energy in the near future or we can say that it will act as a son to save its mother earth.

Figures show that in almost all the square meters of India, sunlight is obtained by an average of 4 to 7-kilowatt hours per hour. In India, the sun rises around 2,300 to 3,200 hours per year. Due to this a large amount of electricity can be produced using solar energy.

At the same time, we will also work to generate the awareness of rainwater harvesting in houses or buildings to increase the level of geological water and through working in the direction of elimination of the use of polyethylene, we will work to save our environment. We will urge People to take care of trees in their surroundings and make the careful use of water. We all know that even after years of efforts, scientists around the world cannot find the 'Second Earth'. Therefore, it becomes the duty of each of us to come forward to protect the Mother Earth. Otherwise, we will be left with nothing except repenting.

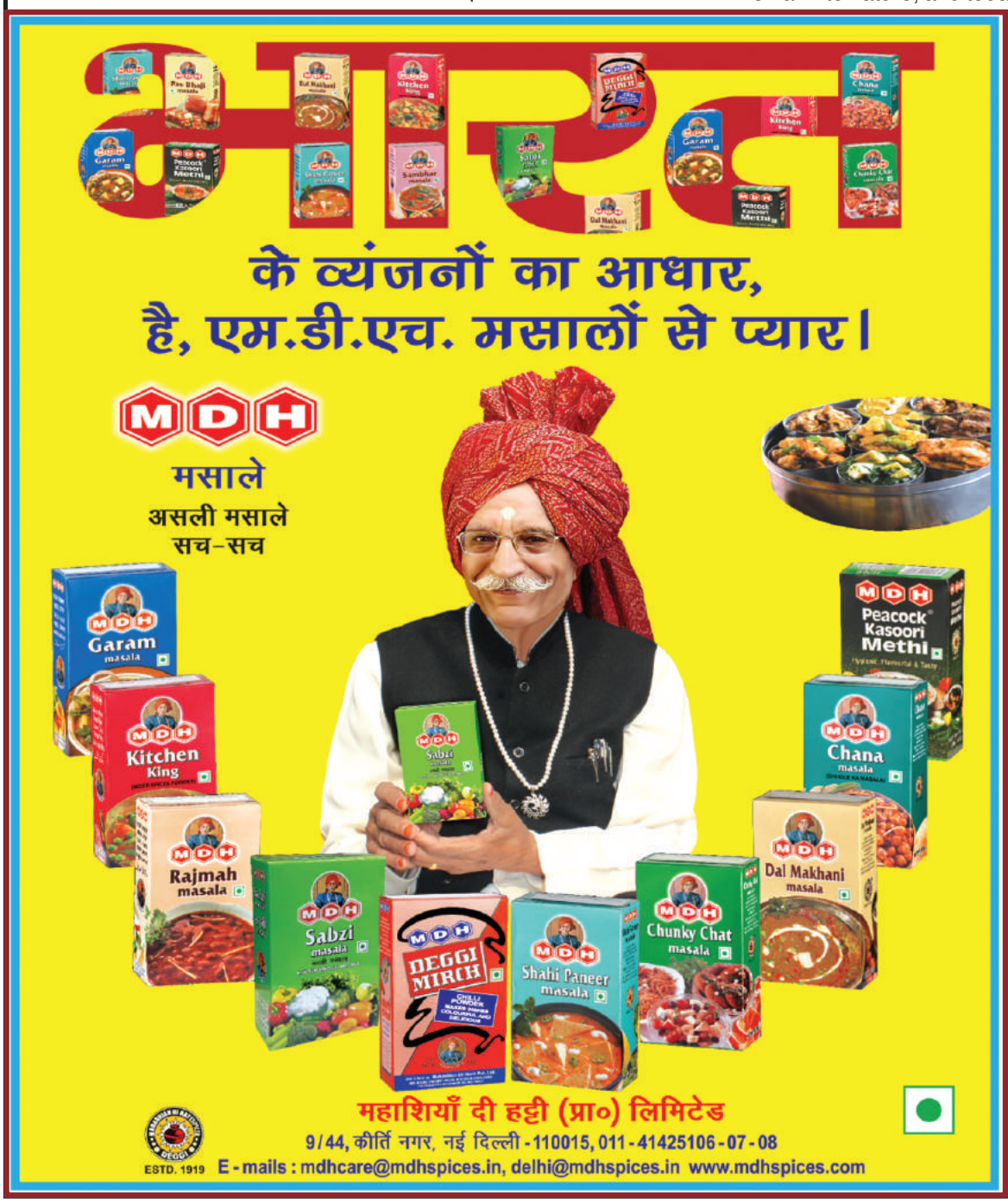

प्रेरक प्रसंग

जब राजेन्द्र लिहाड़ी फांसी पर चढ़े

वीर रामप्रसाद व ठाकुर रोशनसिंह के एक साथी राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी थे। वे उच्च शिक्षित युवक थे। अन्तिम दिनों में उन्हें गोंडा जेल में रक्खा गया। वे भी बड़े ईश्वर-विश्वासी थे। फाँसी दण्ड पाने से पूर्व गीता या उपनिषदों का पाठ करते रहे।

आपने अन्तिम इच्छा व्यक्त की कि उनका दाहकर्म हिन्दूरीति से किया जाए। काकोरी के शहीदों पर छपी उपर्युक्त ऐतिहासिक पुस्तक में यह छपा मिलता है कि गोंडा के जो लोग उनके शव के साथ श्मशान भूमि में गये-'उनमें से अधिकतर आर्यसमाजी सज्जन थे'।

उसी पुस्तक में लिखा है कि आर्यसमाजी लोग वीर शहीद राजेन्द्र लाहिड़ी की अर्थी के साथ ऊँचे स्वर से वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'भारत माता की जय-भारत माता की जय' के जयकारे लगाते हुए श्मशान भूमि पहुँचे। इस प्रकार निर्भीक आर्यवीरों ने देश के इस सपूत का अन्तिम संस्कार किया।

आर्यसमाज के इतिहास की ऐसी कितनी ही महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं जिनकी चर्चा आर्यसमाज से बाहरवाले तो करने से रहे। आर्यसमाज का इतिहास लिखनेवालों को भी इनका ज्ञान नहीं। हम चाहते हैं कि आर्यसमाज की वेदी से जो कुछ कहा जाए सप्रमाण हो। ऐसे तथ्यों की रक्षा करना इतिहास की बहुत बड़ी सेवा है। *- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी
पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का

67वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली का 67वां वार्षिकोत्सव समारोह 30 मार्च से 7 अप्रैल, 2019 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सामवेदीय यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी होंगे। प्रवचन श्रीमती आचार्य कल्पना जी, आचार्य राजू वैज्ञानिक जी एवं भजन श्री अंकित शास्त्री जी के होंगे। इस अवसर पर बाल सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं वेद कथा का आयोजन भी होगा।

– नरेन्द्र वलेचा, मन्त्री

आर्यसमाज कालकाजी के अन्तर्गत

बोधोत्सव एवं स्थापना दिवस

आर्य समाज कालकाजी नई दिल्ली के तत्त्वावधान में ऋषि बोधोत्सव, नव सम्वत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस का आयोजन 7 अप्रैल, 2019 को प्रात: 8 बजे किया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद महायज्ञ का आयोजन आचार्य अजय शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में, भजन आचार्य अजय शास्त्री एवं सिम्मी सचदेवा तथा प्रवचन आचार्य प्रियव्रत शास्त्री जी एवं आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी के होंगे।

– रमेश गाडी, महामन्त्री

आर्यसमाज सुन्दर विहार में बच्चों द्वारा यज्ञ : प्रेरक कार्य

आर्य समाज सुन्दर विहार दिल्ली में प्रत्येक मास के अन्तिम रविवार को बच्चों का कार्यक्रम आयोजित होता है। इस दिन बच्चे ही यज्ञ ब्रह्मा होते हैं और केवल

बच्चे ही यजमान बनते हैं। इस साप्ताहिक यज्ञ के कार्यक्रम में बच्चे दिए गए विषय पर प्रवचन करते हैं और बच्चे ही मंच संचालन करते हैं। आर्यसमाज में यह कार्यक्रम गत 5 वर्षों से किया जा रहा है, जिसमें लगभग 40-50 बच्चे भाग लेते हैं। कार्यक्रम के उपरान्त सभी बच्चों को पुरस्कार एवं जलपान प्रदान किया जाता है। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य महिला समाज का विशेष सहयोग रहता है। आर्यसमाज का यह कार्य प्रेरक है तथा सभी आर्यसमाजों को युवाओं और बच्चों को आर्यसमाज के साथ जोड़ने के लिए अपनाया जाना चाहिए।

– कंवरभान खेत्रपाल, मन्त्री

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़, जिला जालन्धर (पंजाब)- 144001 के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जिसे आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुसार सभी वैदिक संस्कारों को सम्पन्न कराने की योग्यता रखता हो। योग्यतानुसार मासिक दक्षिणा, आवास की नि:शुल्क व्यवस्था दी जाएगी। आवेदक विवाहित हो तो उचित होगा।

– डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा, संरक्षक
मो. 9878798834

145वां स्थापना दिवस समारोह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित विश्व की सर्वप्रथम आर्यसमाज - आर्यसमाज मुम्बई का 145वां स्थापना दिवस समारोह 6-7 अप्रैल, 2019 का आर्यसमाज काकड़वाड़ी, मुम्बई में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रभातफेरी, बृहद यज्ञ, सम्मान समारोह के भी कार्यक्रम होगें। डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. कमलेश शास्त्री, ब्र. अभिषेक शास्त्री, योगश आर्य, प्रभाकर गुप्त, श्रीमती डॉ. अनीता शास्त्री प्रमुख रूप से भाग लेंगे।

-देवदत्त शर्मा, संयोजक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्रीमती मधु धामा को संस्कृति मनीषी सम्मान

गत दिनों वैदिक विदुषी श्रीमती मधु धामा को संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार ने वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार एवं राष्ट्रवादी लेखन के लिए संस्कृति मनीषी सम्मान से सम्मानित किया। दिल्ली के हिन्दी भवन केन्द्रीय संस्कृति मन्त्री डॉ. महेश गिरी एवं शान्ति निकेतन प. बंगाल के कुलपति प्रो. विद्युत चक्रवर्ती ने यह सम्मान प्रदान किया। इसके अन्तर्गत डेढ़ लाख रुपये की राशि, प्रशस्ति पत्र, शाल एवं श्रीफल सम्मान स्वरूप भेंट किए गए। 5 सितम्बर, 1980 को हैदराबाद के एक प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवार में जन्मी मधुबाला (फरहाना ताज) ने सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर वैदिक धर्म अंगीकार किया था। - *तेजपाल धामा*

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में २४ मार्च से 31 मार्च, 2019 तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजन

किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों से १३२ व्यक्तिओं ने भाग लिया, जिसमें गृहणियां, स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राएं, सेवानिवृत्त, इंजीनियर, डॉक्टर, पुलिस विभाग आदि विभिन्न सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति सम्मिलित हुए। स्वामी सत्यपति जी की प्रेरणाएं और आशीर्वाद भी सभी को प्राप्त हुआ। आचार्य सत्यजित् जी ने शंका-समाधान, स्वामी विष्वंग जी ने मंत्रार्थ, स्वामी विवेकानंद जी ने योग-दर्शन, स्वामी मुक्तानंद जी ने ध्यान-उपासना प्रशिक्षण, आचार्य संदीप जी ने न्याय-दर्शन, आचार्य सत्येन्द्र जी ने केन उपनिषद्, डॉ. अर्चना जी ने आत्मनिरीक्षण तथा माता जयाबेन जी और आचार्य कर्मवीर जी ने व्यायाम-प्राणायाम प्रशिक्षण की कक्षाएं लीं। - *संयोजक*

121वां वार्षिकोत्सव पर वैदिक सत्संग

आर्यसमाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर के 121वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर 30-31 मार्च, 2019 को वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य धीरज सिंह, आचार्य रणवीर शास्त्री, आचार्य प्रदीप कुमार मिश्रा एवं पं. सुमित्रदेव आर्य जी के भजन प्रवचन हुए। - *अमित कुमार आर्य, मन्त्री*

क्रान्तिकारियों की कथा

गिरफ्तारी दो खतरनाक क्रान्तिकारियों की

गतांक से आगे -

उन दिनों अमीनाबाद का हल्क़ा कांस्टेबिल अब्दुल्ला के तहत था। अब्दुल्ला और मीर के सम्बन्ध थे ही ग़हरे। तभी तो महावीर होटल की तलाशी लेने पर कभी गिरफ़्तारी न हो सकी। अब्दुल्ला के ज़रिये भेद पहले ही खुल जाता था।

उड़ती चिड़िया भांपने वाले नासिर खां का माथा ठनका। अब्दुल्ला का तो कुछ बिगाड़ा नहीं, लेकिन डी.आई.एस. की मदद लेना बन्द कर दिया। तभी उन्हें अपने खद्दर भण्डार के मुख़बिर से इत्तिला मिली कि बंगाल के दो खतरनाक क्रान्तिकारी अजय कुमार घोष और एच. के. मजूमदार देवली से आये हैं, महावीर होटल में ठहरे हैं। नासिर खां के यह पूछने पर कि हथियारों से लैस हैं या ख़ाली हाथ, मुखबिर ने बताया कि फ़िलहाल तो ख़ाली हाथ हैं, लेकिन एक-दो दिन में उन्हें कानपुर से रिवाल्वर मिल जायेंगे। यदि अभी न पकड़े गए, फिर उन्हें पकड़ पाना आसान नहीं।

ख़ान बहादुर के लिए यही सुनहरी अवसर था। उनके स्टाफ़ में अकेला मैं ही 'डिटेक्टिव' था। उनके आदेशानुसार 26 अगस्त 1940 को प्रात: साढ़े तीन बजे अमीनाबाद पुलिस चौकी (अब थाना) पहुंचा। वह वहीं मिले। ठीक 4 बजे उन्होंने मुझे अपने साथ लिया और ख़रामा-ख़रामा जा पहुंचे महावीर होटल के निकट चौराहे पर। हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी और एक-दो तांगे वालों के अलावा चारों ओर सन्नाटा था। छह फ़ायर का लोडेड वैल्वे-स्काट्स रिवाल्वर मेरे बायें हाथ में था अख़बार में लिपटा हुआ। - *क्रमश:*

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार : क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 1 अप्रैल, 2019 से रविवार 7 अप्रैल, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 4-5 अप्रैल, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 अप्रैल, 2019

नव सस्येष्टी यज्ञ के साथ हुआ 17वें मंगल मिलन समारोह का शुभारम्भ

प्रतिष्ठा में,

होली के अवसर पर नव सस्येष्टी यज्ञ करते हुए आर्य परिवार एवं यज्ञ कराते यज्ञ ब्रह्मा वैदिक विद्वान आचार्य नेरेन्द्र मैत्रेय जी

श्रीमती वीणा एवं श्री धर्मपाल आर्य जी

श्रीमती वृन्दा एवं श्री उदित कुमार शास्त्री

श्रीमती शिखा एवं श्री प्रणव आर्य जी

श्रीमती सुरभि एवं श्री प्रवीण आर्य जी

श्रीमती यामिनी एवं श्री वरुण कुमार सिंह

श्रीमती किरण एवं श्री सतीश चड्डा जी

श्रीमती वीणा एवं श्री धर्मपाल आर्य

श्रीमतीनेहा एवं श्री रोहित सचदेव जी

'होली सो हो ली, भुला दो उसे'
गीत व फूलों साथ होली खेलने का आनन्द ही कुछ और था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह